वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी 2023

- देव समाज के 19वें वार्षिक उत्सव पर भगवान का उपदेश
- देव समाज के लिए त्याग, वफादारी और प्रेम की गाथाएं।
- देवात्मा और देव समाज से कटने का भयानक परिणाम
- मूलवाक्य का इतिहास
- देवगुरू पूजन का प्रचार
- भाई बहन का सम्बन्ध
- महोत्सव पर दान
- देव समाज मंदिर मल्लेकां में नए भवन का निर्माण

इस अंक में

धर्म जीवन के फरवरी के इस अंक में हम हमारे पाठकों के लिए देव समाज से संबंधित लेख प्रस्तुत कर रहे हैं क्योंकि 15, 16, 17 फरवरी 2023 ई. को देव समाज के संबंध में देव समाज उत्सव है। हमारे पूजनीय भगवान देवात्मा ने 136 वर्ष पहले हमारी प्यारी और हितकारी देव समाज की स्थापना की थी। देव समाज देवप्रभाव दायक हितकर मंडल है कि जिसमें हमारी रक्षा और विकास की पूर्ण सामग्री है। देव समाज में देव ज्योति और देव तेज का कार्य मानव हृदयों पर होता है।

देव समाज का सबसे पहली श्रेणी का मैम्बर बनने के लिए आठ पापों जैसे नशों, मांसाहार, चोरी, जुआ, रिश्वतखोरी, अमानत में ख़्यानत, व्यभिचार और जीव हत्या को त्याग करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है, और इसके इलावा मिथ्या विश्वासों (अंध विश्वासों) से भी मुक्त होना पड़ता है।

देव समाज इंसान में शिष्टाचार, श्रद्धा, कृतज्ञता, हानि परिशोध, पर सेवा के उच्च भावों को विकसित करती है।

देव समाज के त्यौहार भी निराले हैं। उसके त्यौहार इस प्रकार के है : माता पिता संतान दिवस, भाई बहन दिवस, पति पत्नी दिवस, नौकर मालिक दिवस, मनुष्य मात्र के संबंध में दिन, पशुओं के संबंध में दिन, पौधों के संबंध में दिन, बेजान जगत के संबंध में दिन आदि। इस प्रकार देव समाज अपने मैम्बरों को अपने विविध संबंधों में जहाँ घर घर नरक है, रहना और जीना सिखाती है।

देव समाज इंसान का हर पक्ष में चाहे वो शरीरिक स्वास्थ्य हो, चाहे वो आर्थिक पक्ष हो, चाहे पारिवारिक और सामाजिक पक्ष हो, चाहे नैतिक पक्ष हो, चाहे अध्यात्मिक पक्ष हो हर प्रकार से विकास करती है।

देव समाज का मुख्य उद्देश्य है, मनुष्यों को पापों मिथ्याओं से निकालना और सम्बन्धों में उच्च मेल स्थापित करना।

इस प्रकार देव समाज इसी पृथ्वी पर सच्चा स्वर्ग पैदा कर रही है, कि जिसके साथ प्रत्येक मनुष्य को जुड़ने की परम् आवश्यकता है।

माता पिता सन्तान ब्रत के बाद भाई भग्नि यज्ञ है, देव समाज भाईयों, भाईयों में जो स्वार्थ का रिश्ता बन जाता है, उसके कारण इस बहुत प्यारे रिश्ते में जो लड़ाई, झगड़े, कत्लोगारत होती है, उसको दूर करके हितकर मेल लाती है, उसके विषय में भी आपको लेख मिलेगा।

– गौतम गोनियाना

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : – श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 2
फरवरी 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

देव समाज के 19वें वार्षिक उत्सव पर भगवान का उपदेश

देव समाज का 19वां वार्षिक उत्सव 16, 17 फरवरी 1906 को निश्चित किया गया था। लाहौर में इस उत्सव की कार्यवाही आरंभ करने से पहले प्राय: 60 – 70 सेवक और श्रद्धालु आदि श्री देवगुरू भगवान की सेवा में उनका अर्चन करने के लिए उपस्थित हुए तो उन्होंने प्राय: एक घंटे तक एक प्रभावशाली दिलों को हिलाने वाला उपदेश देकर उन्हें धन्य धन्य और कृतार्थ किया। इस उपदेश में उन्होंने बताया कि वह दिन जैसे बहुत मुबारिक दिन था जबकि आज से हज़ारों और शायद लाखों वर्ष पहले हिमालय पर्वत पर सूर्य की गर्मी से बर्फ पिघल कर नीचे बहनी शुरू हुई और धीरे 2 जलधारा ने वर्तमान गंगा नदी की शक्ल ग्रहण की। आज तक इस गंगा माता से जिस कदर हमारे देश की भलाई हुई है, जिस कदर मनुष्यों की शारीरिक मैल धुली है और जिस कदर पक्षियों, और मनुष्यों की प्यास बुझी है और हज़ारों, लाखों बीघे ज़मीन की प्रति वर्ष सिंचाई होती है और विविध प्रकार के लाभ हमारे देश को पहुंचे हैं, उसका अनुमान आज कौन लगा सकता है? तब निश्चय ही वह दिन बहुत मुबारिक दिन था, जब गंगा नदी का हिमालय पर्वत के आदृश्य और दूर दूर के स्थानों में चुपचाप आरंभ हुआ और कठोर से कठोर पहाड़ों को चीरती हुई वह धारा आगे बढ़ी। परन्तु गंगा की धारा इस कदर लाभदायक होकर भी केवल मनुष्यों की बाह्यक मैल को धो सकती है और धोती है, इससे आगे नहीं। वह हृदयों की मैल को नहीं धो सकती। यह जल धारा मनुष्यों की नीच प्रकृति को नहीं बदल सकती कि जिससे बाहर की मैल के धुल जाने पर भी यह संसार चारों ओर नर्क धाम बन रहा है और मनुष्य जगत में नीच वासनाओं के प्रकाश से घर घर से हाहाकार की ध्वनि निकल रही है। मनुष्य की इस नीच प्रकृति को कि जो उसकी कुल खराबियों की तह में है, जैसे बाहर का जल नहीं धो सकता, वैसे ही विद्या, व्याकरण, धन, और मान, ईश्वर, और देवी देवताओं का विश्वास, श्लोकों और मंत्रों का पाठ और इस या उस कल्पना का विश्वास भी इस मनुष्य की नीच प्रकृति को बदलने और मनुष्यों की पाप रूपी मैल

को धोने का काम नहीं दे सकता और न ही दे रहा है। इसलिए बहुत मुबारिक है वह दिन कि जिस दिन मनुष्य की आंतरिक मैल को धोने और उसकी पाप रूपी मैल को दूर करके उसके आत्मिक विकास और आत्मिक सौन्दर्य का दरवाज़ा खुला और 20 दिसम्बर 1882 को महाव्रत ग्रहण करने के बाद अनुकूल हालात पैदा होने पर 16 फरवरी 1887 का वह दिन आया कि जब देव समाज की आधारशिला रखी गई और देव धर्म का ऐलान किया गया। जैसा कि आवश्यक था मेरे देश वासियों ने मेरे इस महाव्रत ग्रहण करने और देव धर्म का ऐलान करने पर बहुत विरोधता का तूफान खड़ा कर दिया, जैसे कि मानो पहले सब देवता आबाद थे और केवल मैंने ही एक पापकार्य आरंभ किया था। यह विरोधता का क्षेत्र दिनों दिन खूब बढ़ता गया और मेरे रास्ते में बड़े बड़े चट्टान खड़े किए गए और उनका सिलसिला आज तक भी जारी है, परन्तु जिस महान प्रबंध के अनुसार यह धर्म धारा बहनी शुरू हुई थी और उससे संबंधित जिन पवित्र शक्तियों का प्रकाश हुआ था, उनके द्वारा यह धर्म धारा न केवल सारी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करती गई है बल्कि जिस दिन से यह अमृत धारा बहनी शुरू हुई है। तब से आज तक उसके द्वारा हमारे जिस कदर देश वासियों का विविध प्रकार के पापों और बुराईयों से उद्धार हुआ है, जितने आत्माओं की जिस सीमा तक पाप रूपी मैल धुली है, जिस कदर विविध संबंधों में उनके पाप विकार कटे हैं और सच्चे और जीवित धर्म जीवन में एक या दूसरे अंग के फूटने पर उनके अनेक संबंधों में जिस कदर शुभ और भलाई आई है, उसे देखकर कौन सा दिल होगा कि जो कुछ भी अच्छी प्रकृति अपने भीतर रखकर और देव समाज के इतिहास से परिचित होने पर पवित्र प्रसन्नता और आनंद से न भर जाए और उस दिन को बहुत मुबारिक और आनंद दायक न महसूस करने लगे कि जिस दिन वह पवित्र महाव्रत ग्रहण किया था और जिस दिन उस महाव्रत को पूरा करने के लिए देव समाज स्थापन की गई थी। और अभी देव समाज के जीवन के केवल 19 वर्ष पूरे हुए हैं और ज्यूं ज्यूं इस अमृतधारा की लहर उसके परिचालक की धर्म शक्ति और उसके उपकृत जनों के आत्म त्याग और कुर्बानी से दिनों दिन जोरदार होगी, उससे धीरे धीरे मनुष्य जगत और बाकी के सारे जगतों के विविध अंगों में जिस कदर भलाई का दरवाज़ा खुलेगा, उसका कौन अनुमान कर सकता है? इसलिए ऐसे मुबारिक कार्य के वार्षिक जन्म दिन पर एकत्रित होकर जिस कदर पवित्र भावों से भरने और ऐसे पवित्र काम में भाग लेने के महा अधिकार को महसूस करने और उसके लिए आगे को अधिक से अधिक टूट फूट कर और आंतरिक और बाह्यक कुर्बानी के साथ काम करने की बेहद आवश्यकता का बयान नहीं हो सकता। श्री देवगुरू भगवान के इस उपदेश ने लाहौर में एकत्रित हुए सेवकों और श्रद्धालुओं के हृदयों को जिस कदर पवित्र भावों से भर दिया और इस पवित्र अवसर की विशेषता को महसूस करने के योग्य बना दिया, उसका बयान नहीं हो सकता।

देव समाज के लिए त्याग, वफादारी और प्रेम की गाथाएं।

देव समाज अपने संस्थापक की न्याई अद्वितीय और निराली समाज है। इसको बनाने, चलाने और बढ़ाने के लिए उसके पूजनीय संस्थापक ने अपने आपको कुरबान किया है। उन्होंने अपने अद्वितीय मिशन के लिए धन, मान, इज्ज़त, संतान का अवश्यक त्याग करके, मुकदमों और मुसीबतों को अपने ऊपर लेकर, गालियों का निशाना बनकर, जान तोड़ देने वाली विरोधताओं को अपने सिर पर लेकर अपने खून की एक एक बूंद से इसे सींचा है। उनका अपने अद्वितीय मिशन के लिए अद्वितीय त्याग, तप, उत्पीड़न हमारी भाषा और लेखनी की पहुंच से परे है। देवात्मा के शिष्यों ने अपने अद्वितीय गुरू के देव जीवन से प्रेरणा लेकर विकास पथ के इस लासानी मिशन के लिए त्याग, वफादारी, परोपकार और प्रेम की अनोखी कहानी लिखी है। चलो धर्म संबंधियो ! चलते हैं उस जमाने में जब गिनती के चन्द लोग लाहौर शहर में 16 फरवरी सन् 1887 के दिन अपने देवात्मा गुरू के सामने बैठे हैं और देवात्मा देव धर्म और देव समाज की घोषणा करके देव धर्म की विजय पताका को खड़ा करते हैं। उस समय न प्रचार के लिए मकान थे, न जमीन, न देव शास्त्र आदि। विकासक्रम में उसी साल एक जमीन मिलती है जो उबड़ खाबड़ है। देवात्मा के प्यारे उसे ठीक करके उस पर घास फूस का एक मंडप बनाते हैं और देवात्मा देव समाज के पहले वार्षिक उत्सव पर 'देवधर्म प्रचार हाल' की नींव रखते हैं।

देवात्मा अपने इसी मिशन की सेवा करते हुए मुक़दमों के जाल में फंसा लिए जाते हैं। उनके मिशन की सारी पूंजी इन्हीं मुकदमों में खर्च हो जाती है, घोर संकट का काल है। उनकी एक अनुरागी शिष्य श्रद्धेया जी थोड़े से कपड़े रखकर अपने सारे कपड़े बेचकर इस मिशन का कर्ज उतारती हैं। सूखे टुकड़े खाकर अपने गुरू का प्रचार करती हैं। वो गाती हैं "सूखे टुकड़े खाऊंगी देवराज फैलाऊंगी।"

श्रद्धेय जी लिखती है :– "मेरा यह जंग अपनी किसी निम्न इच्छा को पूरा करने के लिए नहीं, किन्तु देव समाज के पूजनीय संस्थापक और उनके मिशन की जय के लिए है, मैं उसी के लिए अपना सब कुछ खोना चाहती हूँ, क्या दुनिया के रिश्ते, क्या अपनी मान–बड़ाई और क्या अपना और सब कुछ और अपने जीवन की सब शक्तियां परम पूजनीय भगवान देवात्मा की जय के लिए बलिदान करना चाहती हूँ। आप लोग इस कठिन मार्ग में मेरे सहायक हों।"

क्या कभी किसी से आज से 135 वर्ष पहले पढ़ा लिखा इन्जीनीयर फ़कीर देखा है कि जिसका बाप रोता था कि 'गरीब की झोंपड़ी में हाथी पैदा हुआ था पर समा न सका, वो थे श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जिन्होंने इस मिशन के लिए उच्च कोटि की शिक्षा पाकर, नौकरी और शादी को लात मारकर एक रेतीले इलाके में जहां डाकू पैदा होते थे जहां के रास्ते टेढ़े थे, जहां के वृक्ष टेढ़े थे और जहां के लोग भी टेढ़े थे, वहां एक पुरानी झोंपड़ी में डेरा लगाकर, लोगों से भला बुरा सुनकर, सिर पर पत्थर खाकर, ईरानी और ईसाई कहलाकर इस मिशन के लिए अपने आपको फ़ना किया।

एक बार की यह घटना है कि एक कर्मचारी श्रीमान देवत्व सिंह जी के साथ बातचीत

कर रहे थे और कहने लगे कि मैं तो भगवान देवात्मा के कार्य को छोड़कर बहुत सारे और काम करने की योग्यता रखता हूं। इस पर श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने फरमाया कि मैं तो भगवान देवात्मा के कार्य को छोड़कर किसी और काम को करने के पूर्णत: अयोग्य हूँ। यह नहीं कि श्रीमान देवत्व सिंह जी और कोई काम कर नहीं सकते थे, दरअसल उन्हें भगवान देवात्मा के कार्य की तुलना में और कोई काम जंचता नहीं था। वह भगवान देवात्मा और उनके कार्य से बाहर किसी और काम को अधिक वज़न नहीं देते थे वह पूर्ण सतीत्व भाव रखते थे। जिस प्रकार एक पतिव्रता स्त्री पति को मुख्य रखकर ही सम्बन्ध जोड़ती और बनाती है और उनको मुख्य रखकर ही अपना कार्यगत समय व्यतीत करती है, ठीक उसी प्रकार श्रीमान जी का सतीत्व हृदय भगवान् देवात्मा को मुख्य रखकर ही अपना सम्बन्ध औरों से जोड़ता था, और वह भगवान् देवात्मा को मुख्य रखकर ही अपना सारा समय व्यतीत करते थे। उनके इस महा सुन्दर भाव का और सेवकों पर इतना गहरा असर होता था कि उनके दर्शन करके ही उनके भीतर गुप्त रूप से इस प्रकार के धक्के लगते थे, कि हम अपना निज का साधन करें, हम भगवान देवात्मा के साथ अपना सम्बन्ध गाढ़ करें और जहां तक सम्भव हो उनके कार्य में सेवाकारी बनें।

समाज के आर्थिक हालात शुरू के ज़माने में ठीक न थे, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी रूखी सूखी रोटी खाकर खूब काम करते, जिससे उनको टी बी हो गयी, जब उनका अंतिम समय था डॉक्टर उन्हें देखने आया, उन्होंने डॉ साहिब को हंसकर कहा डॉ साहिब अब तो मेरे शरीर में सुई लगाने की भी जगह नहीं बची, अब तो इसका स्थान चिता ही है।

भाई अमर सिंह जी का त्याग उनके संबंधियों की ओर से उनकी पिटाई, उनकी पत्नी और बच्चे की मृत्यु और अपने अद्वितीय गुरू का हर मुसीबत में साथ देना और वफादार रहना। भाई मोहन देव जी, कि जिनके विषय में सिंध में यह मशहूर था कि एक बहुत बड़ा अफसर फकीर हो गया है और सारा सिंध उनके त्याग को मानता था। वफादारी और त्याग की अनोखी गाथाएं हैं।

कनल जी लिखते हैं : "मेरे वतन (सिंध) में इस प्रकार की बातें बच्चों को सुनाई जाती हैं कि जब श्रीमान मोहनदेव जी लाहौर को रवाना हुए, तब स्टेशन पर उनके सम्बन्धियों, मित्रों और वाकफ़कारों का एक बहुत बड़ा मज़मा इकट्ठा हुआ था। उनकी पत्नी और माता जी रोती थीं, और भी कई रोते थे, परन्तु उनका हृदय बहुत कोमल होते हुए भी इस सारी विरोधिता में अपने पूजनीय सत्गुरू को नहीं भुला सका। जो असाधारण श्रद्धा का भाव उनके हृदय में भगवान देवात्मा के प्रति उत्पन्न हो चुका था, वह एक अच्छे हरीकेन लैंप की तरह था, जो लैंप बहुत बड़े तुफ़ान में भी कभी नहीं बुझता। श्रीमान भाई मोहनदेव जी का हृदय डगमगाया नहीं, और उन्होंने जो पवित्र इरादा अपने जीवन को अर्पण करने का किया था, उसमें वह दृढ़ रहे।" कनल जी एक और जगह लिखते हैं : "उस समय जब समाज की आर्थिक अवस्था बेहद नाजुक थी, मैंने वर्षों तक देखा कि भाई मोहन देव जी किस अत्यन्त कम भत्ते पर गुज़र करते थे। कैसे सादा वस्त्र पहनते थे। जब उनके सबसे बड़े पुत्र सेवाराम बड़े हुए तो मैंने देखा कि अनेक बार वे जो कोट पहनते थे, वह फटा हुआ

था और उसकी आस्तीन तो इतनी फटी हुई थी कि उसकी मुरम्मत भी नहीं की जा सकती थी। उस लड़के को मैंने अनेक बार नंगे पाँव शाही बाग की ओर जाते देखा था। उनके पास जूते थे, पर वह केवल स्कूल जाते समय उन्हें पहनता था। अनेक बार मैंने देखा है कि श्रीमान् जी की थाली में कोई सब्ज़ी ही नहीं होती थी। वे किसी अचार से भात खा लिया करते थे। वे और उनका परिवार इन संकटों में से गुज़र रहा था, पर उन्होंने यही नहीं कि कभी शिकायत नहीं की, बल्कि प्राय: यही कहा, "मैं तो भगवान देवात्मा का बहुत आभारी हूं। उन्होंने मुझे बचा लिया। मुझे अपने पूरे जीवन में कभी एक दफ़ा भी यह नहीं लगा कि जो क़दम मैंने उठा लिया है, वह ठीक नहीं है। मैंने तो हमेशा हमेशा यही समझा है कि मैं जीवन के एकमात्र सही रास्ते पर डाल दिया गया हूं। और मेरे उज्जवल सांसारिक भविष्य की आशाओं के तथाकथित बलिदान के बारे में तो मैं यह समझता हूं कि वे तो कंकर पत्थर थे, जिनको देकर मैंने आत्मिक कोष के रत्न खरीद लिए हैं।" भला ऐसी आत्मा कभी भी देवसमाज के प्रति कोई शिकायत कैसे रख सकती थी!

एक राजा महाराजाओं का रिश्तेदार, सुन्दरता का हीरा, कुर्बानी की अनोखी गाथा लिखने वाला देव समाज का एक और रत्न है कि जिसने नौकरी, विवाह आदि को त्याग करके फकीरी का ऐसा चोला पहना कि लोग जिनके चरणों में बैठकर अजीब सकून पाते थे। वे थे श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, जिन्होंने गुरू भक्ति, गुरू सेवा करके अपनी जिन्दगी को तपाकर निखार लिया था। कभी यह राजकुमार हीरा सोलन में गहरी खड्डों से रात को पानी भरकर लाता है, कभी अपनी गुरू की रिक्शा खींचता है, कभी अपने गुरू के जूते पहनने में मदद करने के बाद अपना सिर उनके चरणों में ही रख देता है, कभी अपने गुरू द्वारा स्थापित स्कूल के बच्चों की मां बनकर सेवा करता है, कभी देव समाज की सर्वोच्च संस्था धर्म विकासालय की सेवा का तप कमाता है।

श्रद्धेय कनल जी सैंकड़ों रुपए की वकालत छोड़कर अपने गुरू के चरणों में आ जाते हैं और कभी एक महान लेखक बनकर, कभी सुन्दर और शक्तिशाली वक्ता बनकर, कभी मां जैसे अध्यापक बनकर, कभी अपने विभिन्न संबंधों में महान पति वा पिता बनकर इस लासानी मिशन की सेवा करते हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती जी कनल जी मुसीबतों में से गुजर-गुजर कर अपने बच्चों की शहादत देकर भी अपने लासानी गुरू मिशन के लिए वफादार सिपाही बनकर गुरू मिशन के लिए दान मांगती रही हैं। अपने श्रद्धेय माता पिता की न्याई श्रद्धेय काका जी भी इसी मिशन के महान लेखक और दार्शनिक प्रमाणित हुए हैं।

सरदार सावन सिंह जी, श्रीमान मनोहर लाल जी ईमानदारी के प्रेरणा पुंज बनकर इसी मिशन के रोशन सितारे हुए हैं। किसी ने एक एक कमरे में देव समाज स्कूलों कालिजों को खोल तप कमाया है। किसी ने धन के बड़े बड़े दान देकर, किसी ने अपनी शारीरिक शक्तियां देकर किसी ने मानसिक शक्तियां दान देकर, किसी ने अपनी संतान देकर इस निराले देव हवन यज्ञ में आहुति डाली है।

ऐ! देव समाज के लोगो! उठो जागो यह इन आत्माओं के खून से सींची हुई निराली समाज है इसके लिए तुम भी आवश्यक त्याग करके इसके (देव समाज के) या यूं कहो कि दुनिया के इतिहास में अमर हो जाओ।

- गौतम गोनियाना

देवात्मा और देव समाज से कटने का भयानक परिणाम

श्रीमान मंगल देव जो प्राय: देव समाज की स्थापना के समय से ही देव समाज के प्रचारक थे। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उनके जीवन में आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन आया था और वो अन्य जनों तक भी उन प्रभावों को पहुंचाकर बड़े हितकर परिवर्तन उत्पन्न कर रहे थे। और जिनके विषय में मशहूर था कि मंगल पावे संगल। उन्होंने ही सिन्ध में जाकर श्रद्धेय श्रीमान भाई मोहन देव जी तक भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचाए थे और श्रीमान मोहन देव जी ने फिर सिन्ध में बहुत शानदार काम किया था और सिन्ध का प्रचार क्षेत्र देव समाज का नामी क्षेत्र बन गया था। परन्तु शोक कि श्री मंगल देव जी अपनी कई दुर्बलताओं के कारण भगवान देवात्मा और उनके प्रभावों से कट गए और फिर उनका जो बहुत दुखद अंजाम हुआ वो बहुत शिक्षाप्रद है। उनकी ऐसी कृपापात्र अवस्था में देव समाज के कुछ माननीय कर्मचारी उनसे मिले। इस विषय में श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जो 8 मार्च सन 1927 के 'जीवन तत्त्व' में लिखते हैं: -

प्राय: एक मास पहले मुझे विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान अमर सिंह जी के साथ समाज के एक काम के लिए सियालकोट जाने का अवसर मिला। श्रीयुत (मंगल देव जी) आजकल वहीं ..... रहते हैं श्रीमान अमर सिंह जी उनसे मिलकर आए थे। उन्होंने मेरे से ज़िक्र किया कि वो (मंगल देव जी) प्राय: चार वर्ष से फालिज से बीमार हैं और अपने आपको बहुत दुखिया और बेबस अनुभव करते हैं। मुझे उनकी यह दुखद अवस्था सुनकर जहां बहुत सहानुभूति अनुभव हुई वहां उनके सम्बन्ध में यह दृश्य भी मेरे सम्मुख आ गए कि आज से प्राय: चालीस वर्ष पहले (सन् अठारह सौ अठासी 1888 के आस पास) जब वो देव समाज के कर्मचारी के रूप में मुझे मिले थे और मैं उन की सभाओं आदि में शामिल होता रहा था तब तो भगवान का कार्य कितने जोश के साथ किया करते थे और उनके द्वारा भगवान के देव प्रभाव अन्य अधिकारी जनों तक पहुंचकर किस प्रकार का परिवर्तन लाते थे, और मुझे भी उनकी संगत से बहुत लाभ हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्होंने सिन्ध में जाकर श्रीमान... (भाई मोहन देव जी) के जीवन में कैसा सुन्दर परिवर्तन उत्पन्न कर दिया था। मेरे भीतर यह प्रबल प्रेरणा हुई कि मैं उनसे मिलूं और उनके पास जाकर एक ओर उनकी बिमारी की जानकारी प्राप्त करूं और उन्हें धैर्य देने का कुछ यत्न करूं और दूसरी ओर यह भी जानूं कि वो भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से कट कर अपने आपको किस अवस्था में अनुभव करते हैं - वो (श्रीमान भाई अमर सिंह जी) मुझे कृपा करके अपने साथ उनके पास ले गए। उनके पास पहुंचने पर जब मैंने अपना नाम और पता बताया, तब मेरे साथ जो उनके पुराने सम्बन्ध थे वो ताज़ा हो गए और उन्होंने... जहां अपनी दुखिया अवस्था प्रकट करनी प्रारम्भ की वहां कई बार यह कहा कि मुझे आर्शीवाद प्रदान करें। मैंने कई प्रकार से बहुत घाटा उठाया है और अब मैं बहुत दुखी हूं। मैंने कहा कि बेशक जो शारीरिक रोग हैं वो भी बहुत कष्टदायक हैं और इस में बेहतरी

लाने के लिए जो उचित उपाय हो सकता है वो किए जाने चाहिए परन्तु आखिरकार यह शरीर संसार में सदा नहीं रह सकता। मनुष्य के अस्तित्त्व में सार वस्तु आत्मा है। उनके ज्ञान के बाद यदि मनुष्य की गति उसके भले की ओर हो तो फिर उस शरीर के चले जाने का उसे कोई भय नहीं हो सकता।. . . .

उन्होंने बताया कि उन्हें जब भगवान देवात्मा के श्री चरणों में रहने का महोच्च अधिकार प्राप्त था वो जमाना कुछ और था और उसके बाद का समय सर्वथा पलट गया। भगवान के विशेष उच्च प्रभावों से कट कर और उल्टे प्रभावों में जाकर उनके जीवन की बहुत बड़ी हानि हुई। कुछ काल वो मुक्ति फौज में रहे, कुछ समय स्वामी रामतीर्थ के मिशन में कुछ काम करते रहे। फिर उन्होंने एक सत्युग मंडली बनाई और फिर यह कल्पना करके कि अब जो कलयुग का जमाना है यह अपने स्वचालिक काल में पांच लाख वर्ष और रहेगा, परन्तु हरिद्वार के तीर्थ पर यदि श्री सतयुग की बुनियाद रखी जाए और उसके लिए उनके विचार के कुछ उपाय किए जाएं तो पाँच वर्ष जो और कलयुग रहना है उसका सिलसिला अभी समाप्त हो जाएगा, और सत्युग आरम्भ हो जाएगा... यह सब मेरे मन की कल्पित तरंगे थीं। इस प्रकार से कलयुग ने क्या जाना था और सतयुग ने क्या आना था, भगवान से परे जाकर बहुत पापड़ बेले परन्तु हानि के सिवाए कुछ हाथ नहीं आया। अब अपनी हालत पर बहुत अफसोस होता है। मगर अब कुछ पेश नहीं जाती। जीवनदायक असरों से कट कर और मृत्युदायक असरों में वास करके यही कुछ हो सकता था, जो हुआ। मैंने उन्हें कहा कि अब जिस अवस्था में आप हैं उसमें सिवाए धीरज और हिम्मत के साथ उस का मुकाबला करने का यत्न करने के और कुछ नहीं हो सकता। इस हालत में पड़े पड़े भी यदि आप श्रद्धा और दीन भाव से भगवान देवात्मा को स्मरण करते रहा करें और उनके सिवाए हमारे जो धर्म सम्बन्धी यथा श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी, और श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी आदि परलोक में हैं उन्हें भी याद करते रहा करें तो आशा है आपको गुप्त रूप से कुछ न कुछ आत्मिक सहायता मिलती रहेगी। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा यत्न करता रहता हूं और आगे भी करता रहूंगा।

हम दोनों कितनी ही देर तक उनके पास बैठे रहे और बातचीत करते रहे। जब एक दो दफा हमने वहां से उठकर चलना चाहा तब उन्होंने यह प्रार्थना की कि और थोड़ी देर बैठे रहें। आप लोगों ने बड़ा कष्ट उठाया है, मैं आप लोगों का बहुत आभारी हूं। इसके अतिरिक्त हमने जब उनकी स्त्री, बच्चों और उनकी तरफ से उनकी सेवा आदि का हाल पूछा और यह प्रेरणा की कि इस बहुत बड़ी मुसीबत में आपका कोई लड़का या लड़की आपके पास रह सके या कोई नौकर ही आपके पास हो तो आपको बहुत सहायता मिल सकती है। उन्होंने कहा कि मेरी लड़की और मेरे लड़के तो मेरी कुछ सेवा करना चाहते हैं और रुपये की सहायता भी करते हैं परन्तु शोक कि मेरी पत्नी उनको मेरे पास रहने नहीं देती। वो ऐसे बुरे सलूक करती है कि वो यहां रहकर भी मेरी सहायता नहीं कर सकते। और न ही यह नौकर को रहने देती है। इसलिए मैं घोर यन्त्रणा की अवस्था में हूं कि क्या करूं, किधर जाऊं। इस प्रकार का सारा वृतांत सुनकर

यहां मेरे भीतर उनके लिए बहुत सहानुभूति अनुभव हुई और मैं बार बार उनके भले के लिए मंगल कामना करता रहा और उसके बाद भी कई बार उनको याद करके उनके लिए शुभ कामना कर चुका हूं, वहां मेरे सम्मुख यह दृश्य बहुत उज्जवल रूप से आया कि भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आकर और उनके देव प्रभावों को पाते रहकर एक तुच्छ से तुच्छ आत्मा अपने लिए और औरों के लिए कैसा वरदान बन जाता है और उनसे कट कर नाना प्रकार से कैसी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त मुझे यह स्पष्ट रूप से प्रतीत हुआ कि नीच अनुराग आत्मा के लिए कैसे भयानक हैं.... वह कई अंगों में अच्छा दिल रखकर भी और भगवान देवात्मा के कर्मचारी होकर भी ऐसी दुरावस्था को क्यों प्राप्त हुए। इसलिए कि एक ओर तो उनके भीतर के अहं अनुराग से उत्पन्न घमंड और स्वेच्छाचारिता के खौफनाक भावों ने उन्हें उल्टा दृष्टा बना दिया और वो जिस प्रकार का अच्छा काम भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा कर रहे थे, उसको झूठ मूठ उन्होंने अपने साथ मनसूब कर लिया (समझा कि मेरी शक्तियों से काम हो रहा है) और इस उल्टी दृष्टि से वह अपने आपको अधिक कीमती समझने लगे और अपनी मनमुखी चाल पर चलने को आजादी या अपनी भविष्य की उन्नति का ठीक मार्ग सोचने लगे, और उसके भिन्न पत्नी के मोह अनुराग या उसके दासत्व का भी बोध न पा सके। इस प्रकार के नीच अनुरागों ने अधिकार पा कर उन्हें जहां भगवान देवात्मा से फाड़ दिया, वहां अपने आत्मिक जीवन के विचार से कृपा पात्र अवस्था में पहुंचा दिया। वो स्त्री जिसकी गुलामी में उन्होंने आयु बिताई उनके आत्मा के लिए वो सिवाए विनाश के और कुछ हो ही नहीं सकती थी, किन्तु वह उनके शारीरिक घोर संकट में भी किसी नौकर से भी उचित सेवा पाने में रोक बनती हैं, और अब वो दिल के विचार से इतने दुर्बल हो चुके हैं कि उसके दासत्व से किसी प्रकार पीछा नहीं छुड़ा सकते और सब प्रकार से अपने आपको दुखिया और लाचार और बहुत घाटे में बोध करते हैं और अपनी हालत पर बहुत अफसोस करते और लज्जित होते हैं, और अपनी सब कल्पित आशाओं पर पानी फिरा भी देखते हैं। परन्तु ऐसी हालत से निकलने की कोई सामर्थ्य नहीं रखते। अपने चारों और घोर निराशा और दुख का दृश्य देखते हैं। भगवान देवात्मा की महा दुर्लभ शरण को प्राप्त होकर किसी आत्मा का कट जाना कितने दुर्भाग्य की बात! उनकी जो कुछ शरीर की मुसीबत है उसका तो अन्त हो जाएगा परन्तु हाय! अफसोस उनके आत्मा की महा हानि का अन्त इस शरीर के छोड़ने पर भी न हो सकेगा! और जो घाटा पड़ गया है उसकी किसी प्रकार से भी क्षति पूर्ति न हो सकेगी और उसको याद करके या सम्मुख लाकर केवल शौक, और रुदन ही रहेगा - कैसा दर्दनाक दृश्य!

तब कितनी नितान्त आवश्यकता है कि जिन जनों को भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आने का महा सौभाग्य मिला है, वो उनकी अद्वितीय महिमा को उपलब्ध करें और उसकी सदा रक्षा करें, और जिन्हें ऐसा अधिकार नहीं मिला वो योग्यता रखने पर जहां तक सम्भव हो ऐसा अधि कार पाने का शीघ्र अवसर प्राप्त कर सकें।

मैंने इस दृश्य से जहां भगवान देवात्मा

की अद्वितीय महिमा को अधिक उज्जवल रूप में देखने का अवसर पाया है वहाँ उनका सम्बन्ध सचमुच मेरे तथा अन्य अधिकारी जनों के लिए जो जान और प्राण का सम्बन्ध है, और सब से श्रेष्ट सम्बन्ध है, उसकी वास्तविकता को भी बहुत उज्जवल रूप से उपलब्ध करने का अवसर प्राप्त किया है, और नाना नीच अनुराग (विशेषकर अहं) आत्मा के जैसे भयानक शत्रु हैं उनका रूप भी अधिक स्पष्ट रूप से मेरे सम्मुख आ गया और मुझे उनके दृश्य बड़े भयानक अनुभव हुए। काश! कि मैं पूर्ण रूप से अपनी "मैं " के अधिकार से निकल सकूं, और पूर्ण रूप से भगवान देवात्मा को अपने हृदय पर अधिकार देकर सदा के लिए सुरक्षित अवस्था में पहुंच सकूं।

मूलवाक्य का इतिहास

(1) **गुरूतत्व का प्रकाश और प्रचार –** भगवान देवात्मा जबकि ईश्वर पर विश्वास रखते थे, तब भी वह अपना अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण करने के थोड़े समय के पश्चात् अर्थात जनवरी 1884 से इस महासत्य को देख चुके थे और वह उसका खुले तौर पर पब्लिक में प्रचार करते थे कि उनके भक्तिभाजन ईश्वर भी साक्षात किसी जन में उच्च परिवर्तन उत्पन्न नहीं कर सकते जो भगवान देवात्मा करते हैं। नेचर में किसी आत्मा में ऐसा परिवर्तन लाने के लिए ईश्वर को भी उसी तरह किसी और अस्तित्त्व की आवश्यकता है कि जिस प्रकार उसे इस दुनिया को रौशन करने के लिए सूर्य की आवश्यकता है। इस विषय में भगवान देवात्मा 'मुझमें देव जीवन का विकास' पहला भाग में इस प्रकार फरमाते हैं –

ईश्वर संबंधी कल्पित विश्वासों का यद्यपि मुझ पर वर्षों तक अधिकार रहा, परन्तु फिर भी एक ओर आत्मा में उच्च जीवन की उच्च शक्तियों को पाकर और दूसरी ओर अन्य आत्माओं के भीतर अपनी इन शक्तियों के द्वारा आश्चर्य परिवर्तन देखकर मुझे यह भलीभांत मालूम हुआ कि मेरे भक्तिभाजन ईश्वर भी बिना किसी उच्च जीवनधारी आत्मा की सहाय के आप किसी आत्मा में (जिसमें यह जीवन नहीं) कोई उच्च परिवर्तन नहीं ला सकते और न उसे किसी ऐसे उच्च जीवन विषयक किसी सत्य की शिक्षा दे सकते हैं।

(2) एक मात्र देवजीवन प्राप्त सत्य मोक्षदाता और विकासकर्ता देवगुरू होने का ऐलान – इसके पश्चात् उन्होंने अगस्त 1892 में एक मात्र देवजीवन प्राप्त सत्य मोक्षदाता और विकासकर्ता देवगुरू होने का जो ऐलान किया था, वह यह था –

1. देवधर्म व देवत्व का आर्विभाव किसी पत्थर वा वृक्ष में नहीं हुआ, बल्कि मेरे आत्मा में हुआ है और उनकी कुल उच्च और विशेष खूबियां मेरे आत्मा के भीतर हैं?
2. मूर्ख है वह जो देवत्व के इस विशेष आविर्भाव व उसकी खूबियों और बरकतों को मुझे छोड़ कर कहीं और ढूंढता है।
3. मैं तुम्हारे लिए एक उच्च ज्योति लाया हूँ, तुम मुझसे जुड़ो और उस ज्योति को लाभ करो जो मुझमें है।
4. तुम मेरे साथ जुड़ो और मेरी ज्योति को पाकर ही उन कुल सत्यों को देख और

पहचान सकते हो कि जो देवत्व या देवधर्म की शिक्षा से संबंध रखते हैं।

5. मुझसे सब प्रकार की बग़ावत को छोड़कर दिल के पूरे प्रेम से जुड़ जाओ ताकि मेरी ज्योति तुम्हें अधिक से अधिक ज्योर्तिमान करे।
6. पिशाचत्व के समुन्द्र में डूबते हुए आत्माओं के लिए मैं जीवन की आशा का एक जहाज़ हूं और पिशाचत्व के असरों से गिरे हुए आत्माओं और कौमों के बचाने, उभारने और आला बनाने के लिए मैं मिसल एक ख़मीर के हूं।
7. देवत्व का यह खमीर जो मेरे अन्दर है, पिशाचत्व को मारता और गारत करता है। इसलिए यह पिशाचत्व के ज़हर से भरे हुए आत्माओं के उद्धार और उनकी भलाई का पवित्र दैवी उपाय है।
8. कोई आत्मा ऐसा नहीं जो मनमुखी चाल छोड़कर मेरे साथ कुछ भी जुड़ा हो, वह अपनी पहली अवस्था की निस्बत और श्रेष्ठ व उच्च न बन गया हो।
9. जैसे जो शाख धतूरे के पेड़ से जुड़ी हुई है, वह ज़हरीले फल पैदा करती है और जो अंगूर की बेल से जुड़ी होती है, वह अंगूर पैदा करती है। वैसे ही जो आत्मा अपने या किसी और के मलिन हृदय के वृक्ष से जुड़ा हुआ है, वह अपने भीतर अपने और औरों के लिए ज़हरीले और विनाशकारी फल उत्पन्न करता है और जो आत्मा मेरे साथ जुड़ता है, वह देवअमृत को लाभ करके देवत्व के पवित्र और अमृत फल पैदा करता है।
10. जैसे कोई जन सूर्य की रौशनी को बिना सूर्य के और गेहूं की रोटी को बिना गेहूं के दाने के साक्षात ईश्वर से प्राप्त नहीं कर सकता, वैसे ही देवत्व की जिन विशेष और उच्च खूबियों और बरकतों का मुझमें प्रकाश हुआ है, उन्हें कोई जन ईश्वर से प्राप्त नही कर सकता।

इसके पश्चात् नवम्बर 1892 में देवसमाज में सेवकों और सेविकाओं की दीक्षा के अनुष्ठान का बाकायदा तौर से सिलसिला जारी हुआ।

फिर सन् 1894 के शुरू में भगवान देवात्मा के सत्य अनुराग के विकास क्रम में मानवता के परमहित का एक और नया युग खोलने वाली यह निहायत ही मुबारिक घड़ी आई कि जब उनके भीतर ईश्वर के अस्तित्व के विषय में संदेह उत्पन्न हुआ और उन्होंने बहुत बड़े और पूर्ण अनुसंधान के पश्चात् जब अपनी देवज्योति में उसके मिथ्यापन को अच्छी तरह देख लिया, तब उन्होंने अपने सत्य अनुराग के अनुसार उसे तत्काल त्याग दिया।

शोक समाचार

बहुत शोक की बात है कि देव समाज (G) के बहुत अच्छे सेवक श्रीमान मधु सूदन जी की पत्नी का 19.1.2023 को देहान्त हो गया। वह काफी समय से बिमार थी। मधु सूदन जी ने दिन रात उनकी सेवा की। यह बहुत प्रशंसा योग्य है। हम कामना करते हैं कि दिवगंत आत्मा का शुभ हो और परिवार को धैर्य मिले।

मंत्री, देव समाज (G)

देवगुरू पूजन का प्रचार

ईश्वर की सत्ता के संबंध में मिथ्या विश्वास के नष्ट हो जाने के पश्चात् 24 मई, 1895 को मिन्टगुमरी में एक विशेष घटना पैदा हुई कि जिसके होने पर भगवान देवात्मा को अपने विषय में मनुष्य जगत के लिए एक मात्र सत्य उपास्य देव होने का बोध हुआ और उसके होने पर देवसमाज में देवगुरू पूजन का प्रचार जारी हुआ जिसकी विधि इस प्रकार थी - देवगुरू पूजनकर्ता अपने चित्त को नाना प्रकार की अन्य चिंताओं से हटाकर एकाग्र करे और एकाग्रचित होकर भगवान देवात्मा के देवरूप को सम्मुख लाकर अपने भीतर उनके प्रति श्रद्धा भाव को जागृत करे।

फिर हृदय के इस प्रकार सरस और जयोर्तिमान होने पर देवगुरू स्तोत्र का जहां तक अनुराग और उत्साह और स्वर के साथ पाठ कर सकता हो, वहां तक पाठ करे।

देव स्तोत्र के गान के अनंतर उसकी संक्षिप्त व्याख्या का धीरे - धीरे पाठ और चिंतन करके उनके प्रति अपने अनुराग को उत्पन्न व उन्नत करने के लिए उसने उनकी शरण में आकर अपने जीवन में जिस - जिस प्रकार का जो हित व कल्याण लाभ किया हो, उस पर कुछ समय तक विचार करे। फिर जिन भजनों में इस प्रकार के हित का कथन किया गया हो, उनमें से अपनी अवस्था के अनुसार एक वा दो वा कई भजनों का गान करके जहां तक अपने इस भाव को और गंभीर करके उसका रसमाधुर्य लाभ कर सकता हो, उसे लाभ करे। फिर हृदय की ऐसी अवस्था में जबकि उसका चित्त उनके साथ गाढ़ रूप से जुड़ा हुआ हो, उनके भीतर से उच्च ज्योति और शक्ति को आकृष्ट करने की चेष्टा करे। फिर एक या दूसरे प्रकार के उचित त्याग और सेवा के लिए अपने भीतर आकांक्षा उत्पन्न करने का यत्न करे। फिर इन सब साधनों से अपने आप को धन्य - धन्य और कृतार्थ देखकर और भगवान देवात्मा के प्रति जय - जयकार के भाव से परिचालित होकर हृदय के उत्साह और स्वर के साथ देवगुरू आरती का गान करे।

इस पूजन विधि में जिस देवगुरू स्तोत्र और देवगुरू आरती के गान का ज़िकर आता है, वह देवस्तोत्र और देवआरती भगवान देवात्मा की अद्वितीय विशेषता को जैसे उज्जवल रूप में प्रगट करते हैं, वह जानने वालों से छिपी हुई बात नहीं है। उस देवस्तोत्र और देवआरती में बाद में कुछ शब्दों की तबदीली की गई है, परन्तु मूल बात वही है कि जो पहले आरंभ में थी। हम इस देवस्तोत्र के सारे पद और देवआरती के कुछ पद नमूने के तौर पर नीचे दर्ज करते हैं -

देव स्तोत्र और देव आरती में भगवान देवात्मा के सेवक - सेविका आदि आज से प्राय: एक तिहाई शताब्दी (33 वर्ष) पहले से भगवान देवात्मा को एक मात्र सत्यदेव एक मात्र देवज्योति और देवतेज दाता या दूसरे शब्दों में देवज्योति और देवतेज के सूर्य, एक मात्र सत्यधर्म के शिक्षक, एक मात्र सत्य मोक्षदाता और सत्य विकासकर्ता व एक मात्र सत्य उपास्यदेव मानते चले आए हैं और जिस देव स्तोत्र और देव आरती में उनके ऐसे रूप का प्रकाश किया गया है, वह भी तब से ही प्रचलित है और बहुत से सेवक - सेविका जहां अपने तौर पर अकेले अकेले अपने निज के

साधन में उस देव स्तोत्र और देव आरती का गान करके भगवान देवात्मा की अद्वितीय विशेषता को अपने सामने लाने और उसे उपलब्ध करके उनके प्रति श्रद्धा आदि के उच्च भावों को पैदा करने और बढ़ाने का यत्न करते रहे हैं व अब भी करते हैं, वहां वह लोग मिलकर भी बहुत से सम्मिलित साधनों में ऐसा ही करते रहे हैं, वा अब करते हैं। इसके अतिरिक्त किसी जन को भगवान देवात्मा की सेवकी में ग्रहण करने का जो अनुष्ठान प्राय: 36 वर्ष से जारी है, उसमें भी बहुत वर्षों से भगवान देवात्मा को एक मात्र उपास्यदेव, सच्चा धर्म शिक्षक, परम मोक्षदाता और परम विकासकर्ता विश्वास करने की शर्त ज़रूरी रखी हुई है और 1919 में देवसमाज के सेवकों की श्रेणियों की जो शर्तें सेवक पत्र खंड 12 संख्या 2 में छपी हुई हैं, उनमें एक शर्त यह है - देवजीवन प्राप्त सत्य धर्म के पूर्ण शिक्षक, अधिकारी आत्माओं के एक मात्र सर्वोच्च मोक्षदाता, उच्च जीवन के सर्वोच्च विकासकर्ता और परम उपास्यदेव और परमगुरू श्री देवगुरू भगवान की शरण ग्रहण करने और उनका सेवक बनने का आकांक्षी होना।

फिर यही शर्त और स्पष्ट करके 1920 में सेवक पत्र खंड 13 संख्या 2 में इस प्रकार छपी हुई है जो लोग सत्यदेव भगवान देवात्मा को अपने आत्मा और अन्य सब अधिकारी मनुष्य आत्माओं के लिए एक मात्र और सत्य परमगुरू, एक मात्र और सत्य मोक्षदाता, एक मात्र, और सत्य परम विकासकर्ता और एक मात्र और सत्य उपास्यदेव मानते व विश्वास करते हों वह सेवकी में ग्रहण किए जाने के अधिकारी समझे जाएंगे।

(4) मूलवाक्य की रचना उपरोक्त अद्वितीय देवरूप को देवधर्म की कुल शिक्षा की बुनियाद बनाने के लिए एक नया संस्कृत श्लोक मूलवाक्य के नाम से जारी किया गया, जो यह है -

एको हि देवात्मा सत्यदेव:
स देव ज्योतिर्तेजश्च सूर्य:
स एव एक: सत्य धर्म शिक्षक:
सर्वांग आत्मिक कल्याणकर्ता।

अर्थ - एक मात्र देवात्मा ही सच्चे देवता व सत्य देव हैं। वह देवज्योति और देवतेज के सूर्य हैं। वही एक मात्र सत्यधर्म के शिक्षक हैं और वही अधिकारी मनुष्य आत्माओं के सर्वांग आत्मिक कल्याणकर्ता हैं।

(5) दो विशेष घटनाएं - (1) एक ग्रेजूएट सेवक ने जो सिक्खों की ओर से शायद पंजाब कौंसिल में मैम्बर बनने की आकांक्षा रखते थे, यह प्रकाश किया कि क्या कोई जन देवसमाजी होकर सिख नहीं रह सकता? उनके इस इज़हार का यह मतलब था कि एक जन देवसमाजी भी हो सकता है और साथ ही वह सिख भी रह सकता है या एक जन देवसमाजी भी हो सकता है और साथ ही आर्य समाजी या मुसलमान या ईसाई आदि भी रह सकता है। ओह! देवसमाज की बुनियादी शिक्षा से ही उनकी किस कदर अज्ञानता!

इस ग्रेजुएट के मुंह से सत्य और हित स्वरूप भगवान ने जब उपरोक्त प्रकार का इज़हार सुना तो उनके देव हृदय पर बहुत गहरा आघात लगा और उन्होंने फरमाया कि क्या जो जन देवसमाजी होकर ईश्वर के मिथ्या विश्वास से आज़ाद हो चुका हो और इसलिए सिख गुरूओं को ईश्वर का अवतार और ग्रंथ साहिब को ईश्वर

की वाणी भी न मानता और न मान सकता हो, वह जब देवसमाजियों में बैठा करेगा तब उपरोक्त मिथ्या विश्वासों को मिथ्या और जब सिक्खों में बैठा होगा, तब उन्हीं को सत्य प्रगट करेगा। ओह! सत्य और मिथ्या के ज्ञान के विषय में किस कदर अबोधता!

फिर एक समय में भगवान देवात्मा ने यह इज़हार भी फरमाया कि क्या देवसमाज कोई साधारण क्लब है? अर्थात् जिस तरह कुछ लोग टैनिस या क्रिकेट आदि खेल के शौकीन आपस में खेलने के लिए अपना एक क्लब बना लेते हैं और उस क्लब में मज़हब के विचार से विविध मज़हबी विश्वासों के लोग शामिल हो जाते हैं, या कुछ लोग शराबनोशी के विरूद्ध प्रचार करने के लिए कोई सासायटी बना लेते हैं कि जिस सोसायटी में विविध मज़हबी विश्वासों के लोग मिल जाते हैं, उसी तरह देवसमाज में भी कुछ लोग कुछ नियत पापों को छोड़कर और विविध प्रकार के मजहबी विश्वास रखकर उसके मैम्बर बन सकते है? कदापि नहीं! यदि किसी मुसलमान के लिए यह आवश्यक और बुनियादी शर्त हो कि वह खुदा और उसके रसूल हजरत मुहम्मद साहब पर विश्वास रखता हो और किसी सिक्ख के लिए यह जरूरी या बुनियादी शर्त है कि वह अपने लिए सिक्ख गुरूओं और ग्रंथ साहिब की रहबरी को मानता हो और इस प्रकार और धर्ममतों के लोगों के लिए जिन-जिन बुनियादी विश्वासों पर यकीन करना जरूरी हो, वह करते हों, तब क्या देवसमाज ही एक ऐसी मजहबी सोसायटी मानी जाए कि जिसके मज़हबी विश्वासों की कोई बुनियाद न हो?

झूठे धर्ममतों में शामिल होने के लिए यदि झूठे विश्वासों को मानना जरूरी हो, मगर सच्ची धर्म समाज में शामिल होने के लिए उसके सच्चे बुनियादी नियमों पर विश्वास करने की कोई जरूरत न हो, तो इस हालत में ऐसी समाज का जो परिणाम हो सकता है, उसे सामने लाकर भगवान देवात्मा के दिल पर जो गहरी चोट लगी, उसका बयान नहीं हो सकता।

(2) भगवान देवात्मा को देवसमाज से संबंध रखने वाले कितने ही ऐसे जनों का पता लगा कि उन्हें देवात्मा के संबंध में कोई ज्ञान नहीं और कितनी ही स्त्रियां सत्यदेव के सिवाए किसी और देवी देवता को भी मानती हैं, यह एक और प्रकार की घटना थी, जिसका उनके दिल पर बहुत गहरा असर हुआ।

अब जबकि भगवान देवात्मा की ही देवज्योति को पाकर किसी मनुष्य को आत्मा और आत्मिक जीवन के विषय में सत्य ज्ञान मिल सकता है और इस सत्य ज्ञान से ही उस पर सत्य धर्म की वास्तविकता खुल सकती है और उनकी देवज्योति और उनके देवतेज को पाकर ही उसे अपने अधिकार के अनुसार सत्यमोक्ष मिल सकती है और उसके आत्मा का अधिक से अधिक विकास हो सकता है, तब जो-जो सेवक-सेविका इन बुनियादी नियमों के संबंध में ही कुछ न जानते हों, उनके देवसमाज में शामिल होने के कुछ अर्थ ही नहीं हो सकते। इस दृश्य ने भी सत्य और हित स्वरूप भगवान देवात्मा के दिल पर बहुत गहरा असर किया। इन घटनाओं के पैदा होने से भगवान देवात्मा के सामने यह छवि बहुत उज्जवल रूप से प्रगट हो गई कि बहुत से

सेवक देवधर्म की शिक्षा की बुनियादी बात के सबंध में किस कदर अंधेरे में हैं और कई कर्मचारी नए सेवक – सेविका बनाने में कैसी गल्तियां करते हैं।

अब जबकि भगवान देवात्मा इस दुनिया में किसी सांसारिक स्वार्थ के आधार पर कोई बड़ा जत्था बनाने के लिए प्रगट नहीं हुए, बल्कि जो केवल सत्य और शुभ का राज लाने के लिए प्रगट हुए हैं और केवल उसी के लिए लगातार संग्राम कर रहे हैं, वह सेवकों की ऐसी हालत को जानकर उसे किसी प्रकार भी आगे जारी रहने नहीं दे सकते थे, इसलिए उन्होंने देवसमाज के संशोधन और उसकी बेहतरी में एक नया युग लाने के लिए 1926 के महोत्सव पर एक प्रतिज्ञा पत्र तैयार किया कि जिसमें उपरोक्त मूलवाक्य पर विश्वास की शर्त को मुख्य और बुनियादी शर्त करार दिया गया। और उसके आधार पर सारे सेवक दल की नए सिरे से पड़ताल करने और उनमें से जो जो जन और आवश्यक शर्तों के अतिरिक्त इस शर्त को भी पूरा करते या कर सकते हों, केवल उन्हीं को ही समाज की गठन में सेवक रखने की आज्ञा दी। उनकी इस आज्ञा से यद्यपि देवसमाज में एक बहुत बड़ा इन्कलाब (क्रांति) पैदा हुआ, परन्तु उसकी बुनियाद नेचर की अटल सच्चाई की चट्टान पर कायम हो गई। अब जो सेवक इस नए प्रतिज्ञा पत्र की कोई शर्त पूरी नहीं कर सकते थे, उन्होंने या तो स्वयं ही उस पर हस्ताक्षर नहीं किए या समाज की ओर से ही उनसे हस्ताक्षर नहीं कराए गए।

प्रतिज्ञा पत्र हस्ताक्षर न करने वाले जनों में से कुछ जन ऐसे भी थे कि जिन्होंने इस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर न कर सकने की यह वजह बताई कि वह सेवकी की और शर्तों को तो पूरा करते हैं परन्तु मूलवाक्य पर विश्वास करने की जो नई शर्त बढ़ाई गई है, वह उसे पूरा नहीं कर सकते। खैर, यह तो उनकी अपनी हालत हुई, यदि वह इस शर्त को पूरा न कर सकते हों तो न पूरा करें और वह भगवान देवात्मा से कटकर यदि अपने आत्मिक जीवन का कोई घाटा न देखते हों तो न देखें, परन्तु ऐसे जनों को यह कहना पूर्णत: अनुचित और गलत है कि मूलवाक्य में जिन नियमों का वर्णन है, वह नियम नए हैं। वह कदापि नए नहीं है जैसा कि मूलवाक्य के उपरोक्त इतिहास से साफ प्रमाणित है।

भाई बहन का सम्बन्ध

भाई बहन का सम्बन्ध खून का रिश्ता ही नहीं, बचपन से लेकर जवानी तक खेलना, कूदना, मनोरंजन, कभी झगड़ना, कभी मनाना, प्यार और स्नेह का सम्बन्ध है। जब दो छोटे छोटे बहन भाई एक दूसरे के गले में बाहें डालकर सो रहे होते हैं, तो यह एक स्वर्गीय दृश्य होता है, जिसे देखकर माता पिता भी फूले नहीं समाते, धीरे धीरे नीच भाव पनपने लगते हैं, और स्वार्थ, ईर्षा, कृतघ्नता के भाव बढ़ने लगते हैं तो यह प्रेम वा स्नेह भरा रिश्ता इन भावों की भेंट चढ़ जाता है। क्षमा करना, सारी स्त्रियां तो ऐसी नहीं होती परन्तु कुछ हद तक पत्नियां भी भाईयों,

बहनों के रिश्तों को खराब कर देती हैं। जमीन, जायदाद के पीछे वही भाई एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं, यहां तक ही नहीं कत्ल तक हो जाते हैं। बिल्कुल सच्ची घटना है कि एक भाई के परलोक सिधारने पर दूसरे भाई ने अपनी भावजा और भतीजे को कत्ल कर दिया, ताकि उनकी जायदाद पर उनका अधिकार हो जाए। उनके परिवार पर सदा के लिए बहुत घिनौना कलंक लग गया।

चड्डा बर्दज़ की घटना तो अब तक हमारे जेहन में ताजा है कि किस प्रकार एक फार्म हाऊस के पीछे भाई शत्रु बन गए और दोनों ने एक दूसरे को मार दिया, जिस जायदाद के पीछे यह घिनौना कृत्य हुआ वह इसी दुनिया में रह गई और वह संसार छोड़कर चले गए।

प्रमोद महाजन का छोटा भाई अपने भाई की सारी अनगणित मेहरबानियां भूल गया और अपना और स्वार्थ पूरा न होने से उस भाई को कत्ल कर दिया, जो भाजपा का बहुत सुनहरा भविष्य था, आप भी जेल में ही ख़त्म हो गया, दोनों घरों के बच्चे यतीम हो गए।

ऐसी कितनी जिन्दा उदाहरणें हैं, जहां स्वार्थ और ईर्षा भाईयों को एक दूसरे का शत्रु बना देते हैं, ऐसी घटनाएं अख़बारों में हम प्रतिदिन पढ़ते हैं।

परन्तु इस कलयुगी संसार में ऐसे भी भाई हैं जो अपने बहन भाईयों के लिए वरदान बने हैं।

फेरूशहर के एक माननीय सेवक श्रीमान करम सिंह जी ने एक अनूठी मिसाल पैदा की। उनके भाई को किसी ने झूठे केस में फंसाकर (जहां तक हमें याद है) जेल भेज दिया और उसे 2 महीने की जेल की सजा हुई। करम सिंह जी को गहरा आघात पहुँचा और वह व्याकुल हो गए। रात को उनकी धर्मपत्नी उनके लिए खाना लेकर आई और कहा आप कृपा करके खाना खा लो, उन्होंने भरे दिल और दुख से कहा कि मैं यह खाना नहीं खा सकता। जब तक मेरा भाई जेल में है, उसे जैसा खाना मिलता है, मैं वही खाना खाऊंगा, और वह ज़मीन पर सोएगा, तो उतनी देर मैं भी ज़मीन पर ही सोऊंगा, वाह! भाई हो तो ऐसा!! उन्होंने वैसा ही किया और भाई - भाई के सम्बन्ध की अनूठी उदाहरण प्रस्तुत कर दी।

एक भाई ने लक्ष्मण और राम के स्नेह और लक्ष्मण के अपने भाई के लिए त्याग की गाथा सुनकर सदा के लिए प्रण कर लिया कि मैं जायदाद के पीछे कभी अपने भाई से झगड़ा नहीं करूंगा, और उन्होंने ऐसी ही किया, जब जायदाद का बंटवारा हुआ तो उन्होंने अपने भाई को खुला हाथ दे दिया कि तुम्हें जो कुछ चाहिए ले लो और भाई ने अपने हिस्से से जो कुछ ज्यादा मांगा, उन्होंने खुशी 2 दे दिया। क्या ऐसे भाई कभी झगड़ा कर सकते हैं?

उन्हें शादी पर रेडियो मिला था, परन्तु पुराना ज़माना था, बहन को दहेज में उन्होंने रेडियो नहीं दिया था, उन्होंने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि मैं यह रेडियो तो अपनी बहन को नहीं दे सकता क्योंकि यह आपके माता पिता ने दिया

है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि हम इस रेडियो को तभी सुने जब मैं अपनी बहन को रेडियो लेकर दे दूं और उन्होंने ऐसा ही किया। ऐसा भाई बहन के लिए कितने गर्व की बात!

एक भाई की बहन अपने पति के शराब पीने, पराई स्त्रियों से सम्बन्ध वा दुर्व्यवहार से बहुत तंग थी, परन्तु लड़की अक्सर अपने माता पिता की इज्ज़त के लिए कई बार बहुत जुल्म सह लेती है, भाई को धीरे 2 पता लग गया और बहन को कहा कि मैंने टैक्सी बुक करवा कर तेरे घर भेज दी है, फौरन बच्चों को लेकर आ जा, जब तक तेरा भाई जिन्दा है, तुझे कोई तकलीफ नहीं होने देगा। बहन फिर कहने लगी कि भाई अब वह क्षमा माँग रहे हैं, मैं उसे एक मौका और देना चाहती हूँ। परन्तु आदतें कहां छूटती हैं, आख़िर उससे तलाक लेना पड़ा। छोटे - 2 दो बच्चे एक बार तो अनाथ हो गए। परन्तु भाई ने अपने भाई होने और उन बच्चों के लिए बाप के सब कर्तव्य निभाए। उसको कुछ दिनों में ही माँ बाप के साथ मिलकर 1 कनाल का घर खरीदकर दिया, कार लेकर दी, उसको पूरी तरह से सैटल किया। बच्चों के लिए महंगे 2 गिफ्ट देता रहा। उन्हें विदेश तक घुमाया। जब बड़ा बच्चा 12वी पास कर गया और वह मैडीकल करने की योग्यता रखता था तो कुछ घण्टों में बीस लाख रुपए अपने अकांऊंट से भेज दिये। वह डाक्टर बन गया और क्या कुछ किया, उसकी लिस्ट लम्बी है। बहुत सी बहनें और बेटियां इसलिए भी जुल्म सहती हैं कि कई बार माता पिता की हैसीयत उनके परिवार को पालने की नहीं होती, भाई और भावजा उनको वैलकम नहीं करते।

सौभाग्यशाली हैं, ऐसे बहन भाई जो एक दूसरे के लिए इतनी कुर्बानी करते हैं। सदा स्नेह, कृतज्ञता भरा व्यवहार करते हैं। हमारे एक बहुत नज़दीकी और मनिस्टर रहे हुए जन हैं। उन्होंने बहुत ईमानदारी से राजनीति भी की, पर बहुत योग्य थे, अपनी योग्यता से अच्छी जायदाद बनाई। छोटा भाई आठवीं पास था, उसकी शादी की, जब उन्होंने बंटवारा चाहा, तो आधी जायदाद उसको दे दी। जबकि कमाई उनकी अपनी थी इस प्रकार के भाई एक वरदान हैं।

एक दिन मैं अपने मायके परिवार में बैठी हुई थी। मेरे छोटे भाई से पूछा, सच बताना कि तुम सबसे ज़्यादा किस को प्यार करते हो, उसने जवाब दिया कि यह सच्च है कि मैं अपने वीर जी (बड़ा भाई) को सबसे ज़्यादा प्यार करता हूं। उसकी पत्नी भी वहीं थी, परन्तु बेबाक होकर उसने ऐसे शब्द कहे। क्या ऐसे भाईयों में कभी कलह हो सकती है? उनकी पत्नियां भी उनमें दरार नहीं डाल सकती।

हम उपरोक्त सब भाईयों को दिल से सम्मान देते हैं और ऐसी प्रार्थना है कि अधिक से अधिक भाई ऐसे बनें।

ऐसा बनने के लिए कुछ नुसख़े हैं - स्वार्थ त्याग, एक दूसरे को स्नेह और सम्मान देना, एक दूसरे के उपकारों को याद रखना और सबसे बढ़कर ग़ल्ती होने पर एक दूसरे को क्षमा करना। यदि यह सद्गुण आ जाएं तो हर रिश्ता स्वर्गीय दृश्य पैदा कर सकता है।

- सुरजीत बराड़

महोत्सव पर दान

माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार की ओर से	2,00,000.00
उनकी बेटी डाक्टर नम्रता वर्ष में	1,50,000.00
मिसिज सुरजीत बरार, मल्लेका मन्दिर के लिए	50,000.00
डाक्टर इकबाल सिंह जी के परिवार ने (खाने के लिए)	50,000.00
यशपाल जी भल्ला	31,000.00
डाक्टर नवजोत जी	15,000.00
मुनीश जी S/o सुभाष जी	11,000.00
जसविन्द्र सिंह जी	10,000.00
पवन कुमार जी गुप्ता	5,000.00
दूनी चन्द जी मल्लेका के लिए	5,000.00
डाक्टर नवजोत जी	5,000.00
अमरजीत सिद्धू	5,000.00
जगजीत सिंह जी	5,000.00
बल बहादुर सिंह जी के द्वारा	2,790.00
राज कुमार जी	2,100.00
हेम राज जी	2,000.00
जमुना देवी ट्रस्ट	2,500.00
जगीर सिंह जी	2,000.00
पी. सी. दीवान जी	2,000.00
भारत भूषण जी	2,000.00
दविन्द्र जी	2,000.00
सुखदेव जी गोनियाना	1,710.00
माता सुरजीत कौर जी	1,500.00
श्रीमान के. सी अग्रवाल	1,500.00
ज्ञान जी गोनियाना	1,100.00
देव राज जी, लुधियाना	1,100.00
शुभ रतन जी	1,100.00
जगतार सिंह जी, भटिंडा	1,100.00
सुनील जी, लुधियाना	1,100.00
अशोक कुमार जी, लुधियाना	1,100.00
चन्द्रगुप्त जी	1,000.00
गुरूदेव राज जी	1,000.00
सुरेश कुमार जी	1,000.00
मुकेश जी	1,000.00
सतिन्द्र ढिल्लों	1,000.00
मोहल लाल जी	1,000.00
नरिन्द्र जी चौधरी	1,000.00
यशपाल जी सिंगला	1,000.00
कुलदीप सिंह जी	1,000.00
खुशपाल सिंह जी	1,000.00
दूनी चन्द जी	1,000.00
फुटकल	7,000.00

क्षमा चाहते है कि 1000 रूपये की रक्में लिस्ट में हैं। ज़्यादा नहीं दे सके जिसने जो भी श्रद्धा से दिया, उसके लिए धन्यवाद।

कुल दान -	4,65,240/-
नियत दान -	8800/-
धर्म जीवन और किताबें -	4790/-

अवतार सिंह जी बराड़ और भरपूर जी ने- 50,000/- का वायदा किया है जो जल्दी मिल जाएगा।

श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी ने - 50,000/- मल्लेका लिए देने का वायदा किया है

हम सब दानियों के दिल से अभारी हैं, जो अपने धन से इस मिशन में सहायक हो रहे हैं।

-बलदेव सिंह (मंत्री)

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सामाजिक समाचार

देव समाज मंदिर मल्लेकां में नए भवन का निर्माण

24 दिसम्बर 2022 ई. मल्लेकां सिरसा में जैसे कि पहले ही सूचित किया जा चुका था कि हमारे देव समाज के सारे मंदिरों में से सबसे खूबसूरत मंदिर जो कि मल्लेंकां जिला सिरसा में हैं जहाँ पर हमारे दर्जनों धर्म संबंधी हैं। और सत्संगों के अवसरों पर जरूरत के लिए उस मंदिर को और बढ़ाने की आवश्यकता थी जो बढ़ाया जा रहा है, उस मंदिर के इस भवन का नींव पत्थर 24 दिसम्बर 2022 ई. को रखा गया। यहाँ के सारे धर्म संबंधी विशेष उत्साह से भरे हुए थे। श्रीमान माहना सिंह जी की कोशिश से उस गाँव में देव समाज आई थी इसलिए उनके पारिवारिक जनों के द्वारा ही भवन का नींव पत्थर रखा गया। श्रीमान मेहर सिंह जी और उसकी धर्म पत्नी जी ने नींव पत्थर रखा। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस स्थान पर वर्षो से तप और संग्राम किया है जिसके फलस्वरूप दर्जनों धर्म संबंधी देवात्मा और उनके मिशन के निकट हुए हैं और उनके जीवनों में परिवर्तन आकर उनके घरों में स्वर्ग आया है। देव समाज (G) की और से माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और गौतम गोनियाना 24 दिसम्बर को सुबह ही देव समाज मंदिर पहुँच गए थे। सारे धर्म संबंधियों ने निर्धारित स्थान पर पहुँचकर नींव पत्थर रखा, और भगवान देवात्मा की जय के नारे बुलंद किए, फिर सबको चाय, नाश्ता करवाया गया और लड्डू बांटे गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और गौतम जी, श्रीमान मेहर सिंह जी के घर गए, फिर श्रीमान अजीत सिंह जी के घर जाकर उनकी सेहत का पता किया। फिर श्रीमान सुखदेव सिंह जी के घर खाना खाकर वापस लौट आये। देव समाज (G) और उसके बहुत सारे धर्म संबंधियों की ओर से इस कार्य के लिए दान की बड़ी बड़ी रकमें मिल रही हैं। हम सब उन दानियों का विशेष धन्यवाद करते हैं। यह सब विकास के नियम की विजय है कि उसके सर्वोच्च मिशन की धीरे धीरे जय हो रही है, चाहे यह गति धीमी ही क्यों न हो। मंदिर को नई बिल्डिंग की छत पड़ गई है। श्रीमान बलबहादुर जी, श्रीमान मेहर सिंह जी और धर्म सम्बन्धियों के साथ छत पड़ने पर विराजमान रहे।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts